



## “सफर”

- “आदि गुरए नमह । जुगादि गुरए नमह । सतिगुरए नमह ।  
श्री गुरुदेवए नमह ।”

दास दोनों हथ जोड़ के संगत दे चरनां विच मत्था  
टेकटे होये आपणे गुनाहां दी माफी लई अरदास बेनती करदा  
है । संगत दी समर्था है बक्षण दी, बक्षण दी कृपालता करो  
। संगत दे बक्षो होये नूं गुरु साहब वी बक्ष देंदे हन ।

अज दे इस रुहानी सत्संग लई गुरु साहबा' ने जो  
शब्द बक्षीश कीता है, ओ है “सफर।”

इस जगत दे विच असी बहुत सारे सफर तय करदे  
हां जड़ - चेतन वस्तुआं और संबंधां दे मुतल्लक । जड़ वस्तुआं  
दा भाव है इस जगत दे विच जितने वी तीरथ हन, जितनियां  
वी मूर्तियां हन, मन, बुद्धि और समर्था अनुसार असी इस जग  
दे विच उस परमात्मा नूं लभ रहे हां ओ परमात्मा किस जगह  
है, किस तरीके नाल मिलदा है और असी किस तरीके दे नाल  
इस सफर नूं तय करके उस परमात्मा तक पहुँच सकदे हां ।

- “एहिं कलिकालं न साधन पूजा । जोग - गाय - जप - तप  
- व्रत - पूजा । रामहिं सुमिरिअ गाइअ रामहिं । संतत  
सुनिअ राम गुन ग्रामहि ।” (129-3)
- “साधु चरित सुभ चरित कपासू । निरस विसद गुनमय फल  
जासू । जो सहि दुख परछिंद्रं दुरावा । बंदनीय जैंहि जग  
जस पावा ।” (1-3)
- “पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता । सतसंगति संयुति कर अंता  
।” (7-443)
- “कहौं कहां लगि नाम बडाई । राम न सकहिं नाम गुन गाई  
। चहुँ जुग - तीन काल - तिहुं लोका । भए नाम जपि जीत

बिसोका । बैद पुरान संतमत एहू। सकल सुकृत फल राम  
सनेहू ।” (1.25.4)

- “चारौ - चौदह - अष्टदश, रस रमुङ्गव भरिपूर । नाम भैद  
समुद्धि बिना सकल समझ महँ थूर ।” (6.97)
- “समुद्धत सरिस नाम अरु नामी । प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी  
। नाम रूप दुइ ईस उपाधी । अकथ अनादि सुसामुद्धि साधी  
। कौ बड घोट कहत अपराधू । सुनि गुन भैद समुद्धिहहिं  
साथू । देखिअहिं रूप नाम अर्थीना । रूप ज्यान नहिं नाम  
विहिना । रूप विसेश नाम बिनु जानै करतल गत न परहिं  
पहिचानै । सुमिरिअ नाम रूप बिन देखें । आवत हृदय सनेह  
विसेशे । नाम - रूप गति अकथ कहानी । समुद्धत सुखद  
न परति व्याख्यी ।”
- “सुमिरु राम - भजु रामपद - देख्व राम - सुन राम । तुलसी  
समझाहु - राम कहँ अहनिषि यह तब काम । तुलसी राम  
अजान नर-किनि पावहि पर धाम ।” (वही 2-92, 2-23)
- “निर्गुन ते एहिं भाति बड नाम प्रभाड अपार । कहुँत नामु बड  
राम ते निज विचार अंजुसार ।” (1-22 1/4 -1-23)
- “राम नाम-बोहित भवसागर चाहे तरन तरो सो ।” (विनय  
पत्रिका-173)

»»»हृक«««»»»»हृक«««»»»»हृक«««

अज दे इस मजमून दे विच सतिगुरु जी सचਖਪਣ ਤੋਂ ਇਸ ਰਾਸ਼ਟ੍ਰੇ ਨੂੰ ਉਜਾਗਰ ਕਰਨਗੇ, ਕਿ ਕਿਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਨਾਲ ਜੀਵਾਤਮਾ ਨੇ ਇਸ ਰਾਸ਼ਟ੍ਰੇ ਨੂੰ ਤਥਾ ਕਰਨਾ ਹੈ ਔਰ ਉਸ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨਾ ਹੈ, ਜਿਸਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਕੇ ਏ ਜੀਵਾਤਮਾ ਜੋ ਹੈ ਸਦਾ ਲਈ ਆਵਾਗਮਨ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਏ ਆਵਾਗਮਨ ਕੀ ਹੈ ? ਇਸ ਸੂਛਿ ਦੇ ਵਿਚ 84 ਲਖ ਪਿੰਜਰੇ ਬਣਾਯੇ ਗਏ ਹਨ, ਇਸ 84 ਲਖ ਪਿੰਜਰੇ ਇਸ ਜੀਵਾਤਮਾ ਨੂੰ ਇਸ ਜਗਤ ਦੇ ਵਿਚ ਰੋਕਣ ਵਾਸ਼ਟੇ ਬਣਾਯੇ ਗਏ ਹਨ। ਏ ਜੀਵਾਤਮਾ ਜਦੋਂ ਸਚਖਪਣ ਤੋਂ ਉਤਰ ਕਰਕੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਆਈ, ਉਸ ਵੱਕਤ ਇਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਅਧਿਧਾਰਾ, ਕਾਲ ਪੁਰਖ ਜਿਸਨੂੰ ਅਖੀ ਤ੍ਰਿਲੋਕੀ ਨਾਥ ਵੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਾਂ, ਉਸਨੇ ਉਸ ਅਨਾਮੀ ਤੋਂ ਵਰ ਲੈ ਕਰਕੇ, ਕੀ ਵਰ ਲੇਯਾ ਹੈ ? ਏ ਰੂਹਾਂ ਜੇਡਿਆਂ ਹਨ ਉਸਨੇ ਭਕਤਿ ਦੇ ਜਾਇਏ ਵਰ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਿਆਂ ਹਨ। ਉਸਨੇ 63 ਯੁਗ ਇਕ, 70 ਯੁਗ ਇਕ ਚੌਕੜੀ ਮਾਰ ਕਰਕੇ ਔਰ ਇਕ ਟੰਗ ਤੇ ਖੜ੍ਹੇ ਹੋ ਕਰਕੇ ਉਸ ਅਨਾਮੀ ਦੀ ਉਸ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਬੰਦਗੀ ਕੀਤੀ ਹੈ ਔਰ ਇਸ ਬੰਦਗੀ ਤੋਂ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਹੋ ਕਰਕੇ ਉਸ ਅਨਾਮੀ ਨੇ ਇਸ ਕਾਲ ਪੁਰਖ ਨੂੰ ਏ ਵਰ ਦਿਤੇ ਸਨ, ਕਿ ਏ ਰੂਹਾਂ ਜੀ ਹਨ ਉਸ ਅਨਾਮੀ ਦੀਆਂ ਅੰਸ਼ ਹਨ, ਇਸਦੇ ਊਪਰ ਉਸ ਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦਾ ਕੌਰੰਝ ਪ੍ਰਮਾਵ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਇਸਦੇ ਵਿਚ ਕੌਰੰਝ ਜਮਾ - ਘਟਾ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ,

ਕੋਈ ਇਸਨੂੰ ਮਾਰ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ, ਕੋਈ ਇਸਦੇ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਵੀ ਤਰੀਕੇ  
ਦਾ ਬਦਲਾਵ ਨਹੀਂ ਲੇਯਾ ਸਕਦਾ । ਏ ਨਿਸ਼ਿਤ, ਅਟਲ, ਸਹਜ ਔਰ  
ਆਨੰਦ ਦੀ ਅਵਸਥਾ ਹੈ, ਉਥ ਅਨਾਮੀ ਦਾ ਅੰਸ਼ ਹਨ, ਉਥ ਅਥਾਹ  
ਸਮੁੰਦ੍ਰ ਦੀ ਇਕ ਬੁੰਦ ਹੈ, ਜੋ ਉਸਨੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਹੋ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਇਸ  
ਦਾਸ ਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਝੀਲੀ ਦੇ ਵਿਚ ਤਕਾਸੀਮ ਕਿਤਿਆਂ ਔਰ ਉਸ  
ਤੋਂ ਬਾਦ ਇਕ ਖੇਲ ਰਚਾਯਾ ਹੈ । ਉਸਦੇ ਰੋਮ ਦੀ ਇਕ ਕਿਰਨ ਤੋਂ  
ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਉਤਪਤਿ ਹੋਈ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ ਅਸੀਂ ਸਤਪੁਰਖ ਵੀ ਕਹਿੰਦੇ  
ਹਾਂ, ਦਿਆਲ ਪੁਰਖ ਵੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਾਂ । ਉਸ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਇਕ  
ਕਿਰਨ ਤੋਂ ਇਸ ਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕਿਤੀ ਗੁੜੀ । ਅਸਲ  
ਪਰਮਾਤਮਾ, ਓ ਅਨਾਮੀ, ਬੇਪਰਵਾਹ ਆਪਣੀ ਧੁਨ, ਆਪਣੀ ਮੌਜ ਦੇ  
ਵਿਚ ਮਸਤ ਹੈ, ਕਿਸੀ ਨੂੰ ਉਸਦੀ ਖਬਰ ਨਹੀਂ, ਓ ਕਿਸ ਜਗਹ  
ਨਿਸ਼ਿਲ, ਸਹਜ ਦੀ ਅਵਸਥਾ ਦੇ ਵਿਚ ਆਪਣੀ ਧੁਨ ਦੇ ਵਿਚ ਮਸਤ  
ਹੈ । ਉਸਨੇ ਜੋ ਨਕਲ ਬਣਾਈ ਹੈ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ, ਏ ਨਕਲ ਹੋਣ  
ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਅਸਲ ਦਾ ਕਮ ਕਰਦੀ ਹੈ, ਇਸਦੇ ਵਿਚ ਵੀ ਕੋਈ ਭਿੜ  
- ਭੇਟ ਨਹੀਂ । ਉਸ ਅਨਾਮੀ ਨੇ ਪੂਰੀ ਤਾਕਤ, ਪੂਰੀ ਸਮਰਥਾ ਇਸ ਅਕਾਲ  
ਪੁਰਖ ਨੂੰ ਦਿਤੀ ਹੈ ਔਰ ਉਸ ਤੋਂ ਬਾਦ ਓ ਆਪਣੀ ਧੁਨ ਦੇ ਵਿਚ ਮਸਤ  
ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਔਰ ਏ ਜੋ ਖੇਲ ਰਚਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਏ ਅਕਾਲ ਔਰ ਕਾਲ  
ਦੇ ਵਿਚ ਹੈ । ਰੂਹਾਂ ਜੀ ਹਨ ਓ ਬ੍ਰਹਮ ਧਾਨੀ ਕਾਲ ਦੇ ਹਵਾਲੇ ਕਿਤਿਆਂ  
ਗੁੜੀਆਂ ਹਨ ਔਰ ਅਕਾਲ ਕੀਲੋਂ ਤਾਕਤ ਲੈ ਕਰਕੇ ਇਸ ਕਾਲ ਪੁਰਖ  
ਨੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਜੀਵਾਤਮਾ ਨੂੰ ਤਿਨਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਰੋਕਣ ਲਈ ਇਸ

जीवात्मा दे ऊपर ३ शरीर दे पहरे लगाये हन, उसदे अलावा २५ प्रकृतियां, ३ गुण, ५ विकार, उसदे अलावा ईर्ष्या, द्वेषता, निन्दया, चोरी - चकारी, गुटबंदी और इस जगत दे बहुत सारे छूठे विकार और स्वाद जेडे ने उस जीवात्मा दे ऊपर पहरे दे रूप दे विच बिठाये ने । इस तरीके दे नाल उसने इस जीवात्मा नूं भ्रमाण लई इक आपणा अंश जिसनूं असी मन कहंदे हां, इस पिंजरे दे अन्दर किस तरीके दे नाल जासूस दे रूप दे विच बिठा करके रखया है । जितनी वी क्रिया ऐ जीवात्मा जिस वी चोले दे अन्दर रह करके करदी है, ओ सारी दी सारी खबर जो है इस मन दे जरिये उसदे स्वामी काल नूं मिलदी है और भ्रमाण वास्ते इस जीवात्मा नूं ऐ पता न लगे ऐ निश्चिल, अटल है, अनंत गुणां दी स्वामी, उस अनामी दी बूँद है, इसी नूं भ्रमाण लई, आपणे घर तों दूर करन लई उसने इस जगत दे विच ऐ सारी लीला रची है । ऐ इन्हां अखां दे नाल असी इस जगत दे विच जड़ - चेतन संबंध और वस्तुआं जितनियां वी देखदे हां, ऐ सारियां दी सारियां छूठियां ने । छूठियां क्यों ने, क्योंकि काल जो है ऐ असल दी इक नकल है और इस नकल ने ताकत वी असल कोलों लैंणी है और ताकत लै करके उसने जेडी ऐ रचना रची है, ऐ ३ गुणां दे अंदर रची गई है, सतों गुण, रजो गुण और तमों गुण । ऐ तिनां गुणां दे विच्यों इस जीवात्मा

नूं जिस वी चोले दे अन्दर रखया जांदा है और अगर ऐ जीवात्मा उस चोले नूं कायम रखणा चाहंदी है, रुकणां चाहंदी है, उस चोले दे विच स्थिर रहणा चाहंदी है, भगवान श्री कृष्ण जी ने गीता दे विच इस बीज नूं बिल्कुल स्पष्ट कीता है, कि “हे कुरुन्ती पुन्न, तूं किसी वी चोले में बिना कोई क्रिया किये स्थिर रह ही नहीं सकता !” यानि कि अगर तूं इस जगत दे विच या सूक्ष्म लोकां दे विच या कारण लोकां दे विच स्थिर रहणा चाहंदा हैं, ते तैनूं कोई न कोई क्रिया करनी पयेगी और जदों वी तूं क्रिया करेंगा, इसदे नाल सिर्फ ऐ तेरा चोला ही स्थिर नहीं होयेगा, उसदे नाल उसदा बंधनकारी प्रभाव ब्रह्म दे विच बीज सरूप जमा होंदा रहेगा और जदों वी ऐ तेरा चोला वापस लेया जायेगा, क्यों ? क्योंकि कोई वी चोला जो है तिनां चोलेयां विच्चों, ऐ निश्चित समय लई दिता जांदा है और ऐ स्वासां दी पूंजी है ऐ वी निश्चित है । ऐदे विच वी कोई जमा - घटा नहीं कर सकदा । ऐ निश्चित सीमा दे बाद ऐ चोला जो है तेरे कोलों वापस लै लेया जायेगा और इस चोले नूं रखदे होये, स्थिर करदे होये तैनूं करम ते कोई न कोई जरूर करना पवेगा और ऐ करम करदेयां होयां अगर तूं निष्कामता दी क्रिया अपना लवें, निष्कामता दा करम कर लवें यानि मन, बुद्धि और इन्द्रियां नूं मेरे अन्दर स्थिर करके आपणे आप नूं मेरे अन्दर

स्थिर कर और हर जगह जड़ और चेतन दे विच मेरे ही रूप नूं  
देख, तद जा करके तूं मेरे निज सरूप नूं प्राप्त करेंगा और  
ताहीं जा करके तेरी ऐ जेड़ी क्रिया कीती गई है ऐ निष्कगमता  
दा भाव लै करके आयेगी और जट तकण तूं इस तरीके दा  
भाव उत्पन्न नहीं करेंगा, तेरी कीती गई क्रिया बन्धन दे प्रभाव  
दे विच है । जिन्हाँनूं तूं मारन तों डर रेहा हैं इन्हाँनूं ते मैं पहले  
ही खा चुका वां और उसदे बाद वी कुंती पुत्र ने हथियार नहीं  
सी चुकके । उस तों बाद भगवान श्री कृष्ण जी ने आपणा विराट  
रूप दिखाया, ओनूं दस (बता) दिता, कि मेरे इक रोम दे  
विच्चों अनगिनत ब्रह्मण्डा दी उत्पत्ति है और जिन्हाँनूं तूं  
मारन तों डर रेहा हैं, इन्हाँनूं ते मैं पहले ही खा चुका वां । इस  
तों ऐ भेद तों स्पष्ट हो जांदा है, कि ऐ जो लीला रची गई है  
भगवान श्री कृष्ण, भगवान श्री राम ऐ कौँण सन, ऐ पहचानण  
वाली गल है और अज दे मजमून दे विच सतिगुरु बिल्कुल  
स्पष्ट कर रहे ने, कि असी जेड़ा रस्ता तय करदे इस जगत दे  
विच यानि जड़ वस्तुआं दे विच परमात्मा नूं लभण दी कोशिश  
कर रहे हां, समुद्रां दे विच, तालाबां दे विच उस परमात्मा नूं  
प्राप्त करन दी कोशिश कर रहे हां । क्या ओ परमात्मा इन्हाँ  
जड़ - चेतन वस्तुआं दे विच मौजूद है, ऐ बड़ा सोचण,  
समझण, विचार करन वाला मजमून है । आपणे थोड़ी देर लई

मत, धर्म दीवारा दी इस कैद तों निकल करके, थोड़ी घड़ियां  
वास्ते उस सचखण्ड नाल जुड़ो ! बाहर निकल करके आओगे  
ताहं तुहानूं ऐ जो सचखण्ड दी बाणी प्रभाव लै करके आयेगी  
तुहानूं प्रभावित करेगी, सोचण लई मजबूर करेगी । किस  
तरीके दे नाल इस जीवात्मा दा उद्धार कर सकदे हां और केड़ा  
सफर असी करना है । असी इस जगत दे विच कोई हेमकुंट  
जा रेहा है, कोई बद्रीनाथ जा रेहा है, कितनी लम्बी - लम्बी  
यात्रा करदे हां । इतनी लम्बियां यात्रा करन दे बाद वी जिन्हाने  
ऐ यात्रा कीतियां हन, अगर असी उन्हां कोलों जा करके पुछिये,  
भई तुहानूं परमात्मा दी प्राप्ति होई है? तुहाडे अन्दर प्रकाश  
होया है ? तुहानूं कुछ नजर आया है ? तुहाडे अन्दर जेड़ी विशे  
- विकारा दी अग बल रही सी, उसदे विच कोई शाति आई है  
? तां सानूं सारा मजमून स्पष्ट हो जायेगा, कि ऐ सारियां ही  
गल्ला जेड़ियां जड़ - चेतन वस्तुआं नाल संबंध रखदियां ने  
और असी उन्हां दे विच उस परमात्मा नूं उस अनंत गुणां दे  
स्वामी नूं जिसदे रोम दी इक किरन तों ऐ अनगिनत ब्रह्मण्डां  
दी उत्पत्ति होई है, क्या ओ जड़ वस्तुआं या इस तरीके दे नाल  
संबंधित जड़ चेतन दे नाल उन्हां दे विच किस तरीके दे नाल  
कैद कीता जा सकदा है ! ऐ सारा दा सारा भ्रम फैला रखया  
है, किसने फैलाया है ? इस काल ने यानि कि ब्रह्म ने अंश ऐ

मन नूं हर जीवात्मा दे नाल क्योंकि मन और तन दा पिंजरा  
इस जीवात्मा नूं हर लोक दे विच दिता जांदा है । किस वास्ते  
? कि इसनूं भ्रमां करके किसी न किसी तरीके दे नाल इस  
सृष्टि नूं आबाद रखया जाये । हुण विचार करके देखो, अगर  
ऐ सारियां जीवात्मा इन्हां दे विच्चों निकल करके सचखण्ड  
चलियां जावण, ते इस जड़ वस्तु दी क्या कीमत है ? असी  
साडे माँ - बाप ने, भैंण - भरा ने, धीया - पुत्र ने, और कितने  
ही संबंधी ने, साडा उन्हां दे नाल कैसा प्यार है, कितना असी  
उन्हां दे नाल प्यार करदे हां, आपणी हस्ती तक मिटा देंदे हां  
। हस्ती दा की भाव है, ऐ जेडी स्वास्यां दी पूंजी है ऐ किसे नूं  
बार - बार नहीं मिलणी और न ही इसदे विच कोई जमा -  
घटा कीती जा सकदी है । इस पूंजी नूं खर्च करके असी किस  
तरीके दे नाल आपणी हस्ती तिल - तिल गवां रहे हां इन्हां  
संबंधां नूं कायम रखण वास्ते । विचार करके देखो, क्या कोई  
इस संबंध नूं रोक करके रख सकया है ! किसी ने आपणे माँ  
- बाप, भैंण - भरा, संबंधी नूं रोक लेया ? जदों उसदी वारी  
आई ओ अगे चलदा बणया और जेडा पिछे पुतला रह गया  
मिट्टी दा, उसी वक्त ओ ही पन्नी जेडी कि आपणे पति नूं कितना  
प्यार करदी है, उसी वक्त कहंदी है, ऐनूं बिस्तरे तों थल्ले ला  
देयो और अगर हथ पैर फैल जावण, दरवाजे विच्चों न निकल

सके, ते कहंदी है, ऐदे हथ - पैर कट देयो । ओही पन्नी कह  
रही है, कोई और नहीं कह रही पर मन ने भ्रमा रखया है झूठे  
भ्रम दे विच, की झूठी ममता, झूठी माया । ऐ सारी माया ममता  
झूठी है असी इस झूठ दे विच फँसी बैठे हाँ और ऐ झूठ दे विच  
ही ऐ काल जो है साड़ी हस्ती ऐ जेड़ी स्वास्था दी पूंजी है पल -  
पल तिल - तिल जो है आपणे मुँह दे विच लई जा रेहा है ।  
हर पल, हर घड़ी ऐ काल दा शिकंजा साड़ी गर्दन ते टाईट  
होंदा जा रेहा है, असी इस तों बेखबर हँसदे - खेडदे होये किस  
तरीके नाल इस जिन्दगी नूं बिता रहे हाँ । साघ - संगत जी,  
जिसने रोंदेया छोया पहले ही अथरू बहा लये, इस जिन्दगी दे  
विच रो लेया, उसनूं फिर मरन दे बाद रोणा नहीं पैदा । जेड़ी  
जीवात्मा निकलदी है न, उसनूं केड़े तरीके नाल कड़या जांदा  
है इसदा भेद सिर्फ संतां दे कोल है । कोई नहीं जाणदा, सारे  
संबंधी रोंदे - पिटदे कोल बैठे रह जादे ने, उस रुह नूं कनों  
(कान से) पकड़ के किस पासे लै गये किसी नूं पता वी नहीं  
लगा और जिन्दगी भर ऐ हस्ती मिटा करके जेड़ी जड़ - चेतन  
वस्तु और संबंध इकट्ठे करदी रही न ओ, जीवात्मा ओ पलट  
करके वी दस नहीं सकदी, मेरा की हशर हो रेहा है ! मैंनूं कैसी  
मार पै रही है ! मैंनूं आ के छुटाओ ! हुण जेड़िया वस्तुआं कोल  
सन, ओ नाल जादिया नहीं, ओ पलट के दस सकदा नहीं,

ऐसा भयानक दुख उस जीवात्मा नूं सहणा पैंदा है जदों उसदी रुह नूं इस शरीर विच्छौं कड़या जांदा है ! कदे किसे ने विचार कीता है, कि मरन दे बाद कोई कित्ये गया है ! उसदा क्या हशर होयेगा ! किस तरीके दे नाल उसनूं ऐ सारी विपदा दा सामना करना पयेगा ! ऐ 84 लख जामेयां दे विच ऐ निचले जामेयां दे विच जरा नजर मार के देखो, कि कैसी - कैसी हालत होई पई है । इक गधे नूं देखो, इक कुत्ते - बिल्ले नूं देखो, मुर्गेयां दी तरफ देखो, इन्हां बकरेयां नूं देखो, किस तरह जिबह कीते जा रहे ने । खून दी इक नाड़ी होंदी है, उसनूं थोड़ा जेया कट के न टोकरे दे विच रख ढेंदे ने । उसदे बाद ज्यों - ज्यों खून निकलदा है न, ओ तङ्फ - तङ्फ के जीवात्मा कट्टी जांदी है । ऐ है निचले जामेयां दा हाल ! उतले जामे दा वी की हाल देखणा है, मनुखे जन्म दे विच हस्पतालां दे विच जा के देखो कैसी हाहाकार मची होई है, कैसे - कैसे दुख लगे होये ने इस जीवात्मा इस मन दे पिंजरे दे नाल । और की कहणा है जा करके जेलां दे विच देखो, कैसे - कैसे पिंजरेयां दे विच कैद करके रखया गया है और आपणे घर दे विच देख लो, पन्नी कहणा नहीं मनंदी, पन्नी हुक्म दे विच नहीं है । पति घराब पी के आंदा है, माँ - बाप नूं देख लो, भैंण - भरा नूं देख लो, सारे ही संबंध देख लो, सारे ही काल दा रूप ने । किसनूं क्या

इन्हां संबंधां विच सुख प्राप्त होया है ? अज तक किसे नूं नहीं होया ! ऐ जितनी जड़ - चेतन वस्तु, संबंधां दी रचना नजर आ रही है ऐ सारी दी सारी खत्म हो जाणी है, ऐ सारी मिट जाणी है । ऐ प्रलय आंदी है इक सीमा दे बाट, कदों आंदी है ? जदों ओ अनामी जो है चाहंदा है उस वक्त । ऐ त्रिलोकी तक दा जेडा राज है, जेडा इस काल पुरुष नूं दिता गया है, ऐ सारी दी सारी रचना सिमट करके पारब्रह्म विच पहुँच जांदी है यानि कि ब्रह्म तक दी रचना सारी खत्म हो गई पर ऐ जेडियां रुहां ने, इन्हां रुहां ते कोई प्रभाव नहीं पैंदा, ऐ सारियां रुहां पारब्रह्म पहुँच जादियां ने उस वक्त पारब्रह्म यानि कि सोहंग दा देश और सचखण्ड दा जेडा दसवा द्वार है उसदे तल्ले तक दी जेडी रचना है ऐ महाप्रलय दे विच खत्म हो जांदी है, ओ रुहां सारियां दीयां सारियां सचखण्ड पहुँच जादियां ने । हुण विचार करके देखो, ऐ महाप्रलय कदों आणी है कोई नहीं जाणदा ! अगर असी आपणे आप नूं इस जीवात्मा नूं सुखी देखणा चाहेंदे हां, सानूं तरस आंदा है इस जीवात्मा दे ऊपर, कि असी इसनूं आवागमन तों मुक्त करा लईये, ते जींदे - जी दा रस्ता है ।

“जीवित मरिओ भवजल तरिओ ।” बिना जींदेयां इस भवसागर तों कोई नहीं पार कर सकया । ऐ जो सफर है गुरु नानक साहब जो दे रहे ने सचखण्ड तों ऐ केड़ा रस्ता है, ऐ जींदे -

जी मरन दा रस्ता है । जेड़ा जींदे - जी रागां विच ही फँसया  
रह गया, नादां विच फँसया रह गया “राग नाद हरि घोड़िये ता  
दरगाह पाईये मान ।” जिसने राग नूं त्यागया । राग केड़े ने ?  
जेड़े मन दी रचना दे नाल इस जगत दीयां रागिनियां असी  
देख रहे हां, सुण रहे हां इन्हां कब्जा दे नाल और बड़े स्वादां दे  
नाल इन्हां रागां नूं गादे हां, नाद । नाद किसनूं कहा है ? उस  
आवाज नूं कहा है उस परमात्मा दी आवाज नूं ओ परमात्मा  
दी आवाज केड़ी है, ओ नाद केड़ा है, असी केड़े नाद विच फँसे  
हां ! इस जगत दे विच जितने वी instrument चल रहे ने,  
इन्हां instruments दे नाल मन दे और जुबान दे नाल जेड़े  
राग असी गा के केड़े नाद दे विच फँसे बैठे हां, इन्हां दे नाल  
ओ परमात्मा कटी नहीं प्राप्त होंदा ! ऐ सारे दे सारे मन दा इक  
गुण है, उस काल दा इक गुण है, उस काल दे वी 36 पदार्थ,  
36 गुण ने और इसने इस राग और नाद नूं आपणा गुण बणा  
के प्रगट कीता है । क्यों प्रगट कीता है, कि ऐ सारी जीवात्मा  
भ्रमा दितिया जाण । भ्रमा के ही ओ आपणी इस जड़ - चेतन  
दी रचना रची है उसनूं रौनकमई रख सकदा है । अगर ऐ  
रौनक निकल गई, ऐ जीवात्मा निकल गई और असी राग और  
नाद विच फँसे रह गये, ते कदों हरी नूं प्राप्त कराए ? उस हरी  
नूं प्राप्त करन वास्ते इक नाद परमात्मा ने दिता है । ओ नाद

केड़ा है ? ओ सचखण्ड तों उस परमात्मा ने, उस अनामी ने इक आवाज उत्पन्न कीती है आदि काल विच जदों तों ऐ सृष्टि रची गई है, उसने इक हौंकारा भरया है, उस हौंकारे दे नाल केड़ी रचना रची गई ? उस हौंकारे दी जेड़ी आवाज सी, ओ “ओम” दे नाल मिलदी जुलदी सी, जिसनूं असी “ओम” कह के पुकारदे हाँ । उस ओम दे नाल ऐ सारी जड़ चेतन रचना रची गई है, अनगिनत ब्राह्मण्डां दी रचना रची गई है । किस तरीके दे नाल ओ नाद पौढ़ी दर पौढ़ी रचना करदा होया सूक्ष्म और कारण लोकां दी, उस तों थल्ले निचले लोकां दी । निचले लोकां विच आंदा होया इस जगत दे विच जड़ और चेतन सारेयां नूं आधार दे रेहा है । कोई वी वस्तु, अज अगर आत्मा वी टिकी होई है ते उस नाद दे जरिये टिकी होई है, अनहद नाद इसनूं कहंदे ने । अनहद इस करके कहंदे ने, कि कोई नहीं जाणदा, ऐ कित्थो शुरू है, कित्थे ओदा आदि और अंत है, कित्थे खत्म है ! किस तरीके दे नाल असी ओदे तक पहुँच सकदे हाँ, ऐदा भेद सिर्फ संतां दे कोल है और उसी नाद ने इस जगत नूं जड़ और चेतन नूं बनाया है । “सबदे थरती सबदे आकाश सबदे सबद भड़आ परगास ।”<sup>11</sup> उस शब्द दे विच इक प्रकाश वी है, उस शब्द ने ऐ सारी जड़ और चेतन दी रचना कीती है और रचना करन दे बाद इस सारी वस्तु नूं आधार वी

दे रेहा है । किस तरीके दे नाल हुण विचार करके देखो, पृथ्वी है, पृथ्वी दे चारों पासे पाणी है, कदे किसी ने विचार कीता है, कि ऐ पाणी किस तरीके दे नाल टिकया होया है ! किसने इस पाणी नूँ आधार दे रखया है ! सारी पृथ्वी है ऐ पृथ्वी आपणे धुरे ते धुम रही है, सारा आकाश है, आकाश दे विच अनगिनत ब्राह्मण्ड ने, सारे ही ग्रह चल रहे ने, इक - दूजे दा चक्कर वी लगा रहे ने, आपणे धुरे ते वी धुम रहे ने इतना बड़ा आकाश है, लख आकाश, लख धरतियाँ, कोई नहीं जाणदा कितनियाँ धरतियाँ और आकाश ने । अनगिनत ने, ऐ सारेया नूँ आधार किसने दिता है, ऐ विचार करन वाली गल है ! जिस जड़ वस्तु दी असी पूजा करदे हाँ, जिस पाणी दे विच उस परमात्मा नूँ तलाश कर रहे हाँ, याद रखणा कदी वी ओ अनंत गुणां दा स्वामी, ओ महान चेतन सत्ता किसी वी जड़ वस्तु दे विच कैद नहीं हो सकदी ! यानि कि ऐ जेडी वस्तु है, ऐ परम चेतन दा अंश है इसनूँ प्राप्त करन लई कोई परम चेतन दा अंश जिसनूँ कि असी संत कहंदे हाँ, ओ ही इस सफर नूँ तय करवा सकदा है, और किसी दे विच कोई ताकत नहीं, कोई समर्था नहीं कि उस सफर नूँ तय करवा सके ! जिसदी असी पूजा करदे हाँ, अख बंद करके जदों असी ध्यान लगादे हाँ, ऐ सारा रस्ता किस तरीके दे नाल तय होंणा है ? ऐ नौ द्वारे ने, ऐ नौ द्वारेया दे

विच्छों निकल करके जदों जीवात्मा ने दसवें द्वार पहुँचणा है। तुलसी दास जी दी जेड़ी रचना रामायण है इसदे विच उन्हाने इक गल बिल्कुल स्पष्ट कीती है, उसदा नाम रखया है “रामचरित्रमानस ।” रामचरित्रमानस दा की मतलब है ? राम द्वारा निर्मित, मानस दा अर्थ है पूरा मानसरोवर यानि कि मान केड़ा है ? मान किसनूं प्राप्त होंगा है ? इस जगत दे विच जेड़ी वी मान सानूं प्राप्त हो रहे ने, जड़ वस्तुआं, चेतन संबंधा दे संबंध दे विच, ओनां मान दी गल नहीं कीती जा रही । बहुत सारा धन मिल गया राज - पाट मिल गये, सोंहणी स्त्री मिल गई, सुन्दर पति मिल गया, बहुत सारे होर संबंधी मिल गये, ऐ सानूं बड़ा मान प्राप्त होंदा है, देह करके प्राप्त होंदा है, ऐ देह करके मान दी गल नहीं हो रही, तुलसीदास जी ने जेड़ी गल कीती है मानसरोवर, ऐ मान किसनूं मिलना है ? ऐ आत्मा नूं मिलना है । ऐ आत्मा जेड़ी है ऐ बलवान उस परमात्मा दा अंश है । जेड़ियां इन्द्रियाँ ने न, इन्द्रियाँ तों सूक्ष्म मन है, मन तों सूक्ष्म बुद्धि है और बुद्धि तों सूक्ष्म आत्मा है, इस करके “हे कुन्ती पुत्र तूं ऐ न कह, तेरे विच बल नहीं है, तेरे विच जेड़ी आत्मा है ऐ सब तों बलवान है । इस करके तूं आपणे बल दा इस्तेमाल कर, आपणी इन्द्रियाँ नूं वश विच कर, आपणे मन नूं आपणे वजीर दे रूप दे विच आपणे अर्थीन कर और जिस बेले ऐ तेरा मन इन्द्रियाँ दी दासतां तों मुक्त होयेगा, ऐ स्थिर

होंणगे ।” यानि कि “दस इन्द्री कर रखै वास ताकै आतमे  
होये परगास ।” जदों तक ऐ दस इन्द्रियाँ, ५ कर्मेन्द्रियाँ, ५  
ज्ञानेन्द्रियाँ और मन, बुद्धि, चित और अहंकार जद तक ऐ १४  
वस्तुओं स्थिर नहीं न होंण गीया, तद तकण ऐ प्रकाश और  
अनहृद नाद सानूं सुणाई नहीं दे सकदा, ऐ प्रकाश सानूं दिखाई  
नहीं दे सकदा । इस करके तुलसीदास जी ने कहा, ऐ जीवात्मा  
दी जेडी मान प्राप्त करन दी अवस्था है, ऐ कदों प्राप्त होयेगी,  
जदों उस सरोवर दा स्नान करेगी, उसदा दर्शन करेगी । हुण ऐ  
मानसरोवर केड़ा हैगा, ऐ बड़े विचार करन वाली गल है कि ऐ  
मान सरोवर किस जगह मिलदा है ! हुण ऐ ध्यान धर के याद  
रखणा, इस सृष्टि दे विच जेडी कि जड़ चेतन संबंधां दे ऊपर  
रची गई है इन्हां लोकां तिनां गुणां दे आधारित इसदे विच  
कोई वी ऐसा मानसरोवर नहीं है जिसदा दर्शन करके या  
जिसदा स्नान करके इस जीवात्मा दे ऊपर जेडे परदे चढ़े होये  
ने, शुरू विच गुरु साहबां ने स्पष्ट कीते ने, २५ प्रकृतियां ने,  
३ परदे ने, ३ गुण ने और जेडे विकार ने, ऐ बोझ जद तकण  
नहीं उतरेगा, ऐ जीवात्मा दा प्रकाश, ऐ ताकत प्रगट नहीं हो  
सकदी । यानि कि उस मानसरोवर दे असी दर्शन करने ने,  
स्नान करना है, पर ओ मिलदा कित्थे है ? तुलसीदास जी ने  
बड़े गहरे भेद दे विच ऐ सारी रचना इक महाकाव्य दे रूप दे

विच कदों रची गई, ऐ बड़े विचार करन वाली गल है ! उन्हाने आपणे सतिगुरु तों किसी वक्त नदी दे घट ते बैठ करके सिर्फ इक वारी ऐ रचना सुणी सी यानि कि ऐ कथा सुणी सी, उस तों बाद जदों ओ आपणे गुरु दे चरनी लगे, उस राम नूं ओ राम केड़ा है ? ओ रमईया है, “घट - घट के अंतर की जानत, भले बुरे की पीर पछानत ।” जेड़ा कि हरि घट दे अंदर मौजूद है उस राम दी गल कीती है, पर उस वक्त समय ऐसा चल रेहा सी, कि निश्चित तौर ते ऐ सारे भेदां नूं प्रगट नहीं सी कीता जा सकदा । हुण विचार करके देखो, जितने वी संत महात्मा होये ने, आपणे समय दे विच जदों वी आये ने, सारी सृष्टि ने उन्हां दी खिलाफत कीती है । ईसा नूं देखो उसनूं सूली ते चढ़ा दिता, संत परवेद नूं देखो ओदी खाल उतार लई गई, गुरु तेग बहादुर जी नूं देखो उन्हानूं आपणा सिर देंणा पेया, कलगीधर पातशाह नूं देखो उन्हाने आपणे छोटे - छोटे बच्चे, इक ५ साल दा सी, इक ७ साल दा सी, जिन्दा ही नीवां विच चुणवां दिता, गुरु अर्जन देव पातशाह दी तरफ देखो, तवे ते जींदे ही बिठाए जा रहे ने, गर्म करके रेते सिर ते पाये जा रहे ने । ऐ परमात्मा दे रूप सन, इन्हां दे अन्दर ओ परमात्मा प्रगट सी । ओ अकाल पुरुख दी ताकत जिसनूं कोई इस सृष्टि दे विच जाणदा नहीं, जड़ - चेतन सब लोकां नूं आधार देंण वाला, इक गुण दे रूप

ਦੇ ਵਿਚ ਐ ਸਾਰੀ ਸੂਛਿ ਦੇ ਵਿਚ ਵਿਚਰ ਰੇਹਾ ਹੈ । ਵਿਚਾਰ ਕਰਕੇ  
ਦੇਖੋ, ਕਬੀਰ ਸਾਹਬ ਦੇ ਸਮਯ ਦੇ ਵਿਚ ਕਿਤਨੇ ਹੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਲ  
ਅਪਰਾਧ ਕਿਤੇ ਗਿਆਂ ਹਨ ਮਾਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਿਤੀ ਗਈ ਉਥਦੇ  
ਨਾਲ ਹੀ ਜੇਡੇ ਤੁਲਸੀਦਾਸ ਦੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਰਖਟੇਥਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਬਹੁਤ  
ਸਾਰੀ ਰੁਕਾਵਟਾਂ ਪਾਈਆਂ ਗਈਆਂ ਤਾਂ ਐ ਸਾਰਿਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਮੁਖ ਰਖਦੇ  
ਹੋਏ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਜੇਡਾ ਭੇਦ ਸੀਗਾ ਉਥ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਦਾ, ਐ  
ਜੇਡਾ ਸਫਰ ਸੀਗਾ ਉਥ ਮਾਨਸਰੋਵਰ ਤਕ ਪਹੁੰਚਣ ਦਾ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਬੱਡੇ  
ਗਹਰੇ ਭੇਦ ਦੇ ਰੂਪ ਦੇ ਵਿਚ ਇਸਦਾ ਨਾਮ ਰਖਿਆ ਰਖਨਾ ਦਾ  
“ਰਾਮਚਰਿਤਮਾਨਸ ।” ਉਥ ਦੀਆਂ ਸਾਰਿਆਂ ਤੁਕਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਅਥੀ ਅਗਰ  
ਪੂਰ੍ਣ ਸੱਤਾਂ ਦੀ ਸ਼ਾਰਣੀ ਆ ਜਾਈ ਤਨ, ਮਨ, ਧਨ, ਬਚਨ ਔਰ ਕਰਮ  
ਦੀ ਟੇਕ ਲੈ ਕਰਕੇ, ਤੇ ਗੁਰੂ ਜੋ ਨੇ ਜਦੋਂ ਸਤਿਗੁਰ ਵਿਚ ਹਾਜ਼ਿਰ ਹੋਂਦੇ  
ਨੇ, ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਂਦੇ ਨੇ, ਸਚਖਣਡ ਦੀ ਬਾਣੀ ਹੈ, ਐ ਸਚਖਣਡ ਦੀ ਬਾਣੀ  
ਨੂੰ ਓ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਦੇ ਨੇ, ਜਦੋਂ ਪਹਲੇ ਉਚਾਰੀ ਗਈ ਸੀ, ਤਾਂ ਵੀ ਐ  
ਸਚਖਣਡ ਦੀ ਬਾਣੀ ਸੀ, ਅਜ ਉਚਾਰੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ, ਤਦ ਵੀ ਐ ਓ  
ਹੀ ਹੈ । ਸਿਰਫ ਫਕ੍ਰ ਐ ਹੈ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਲਫਜ਼ਾਂ ਦਾ ਫੇਰ ਹੈ, ਅਗਰ  
ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਵਿਚ ਹੈ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਦੀ ਟੋਨ ਹੈ, ਹਿੰਦੀ ਦੇ ਵਿਚ ਹੈ ਤੇ  
ਹਿੰਦੀ ਦੀ ਟੋਨ ਹੈ, ਅਗਰ ਉਰ੍ਦੂ ਦੇ ਵਿਚ ਹੈ ਤੇ ਉਰ੍ਦੂ ਦੀ ਹੈ ਧਾਨਿ ਕਿ  
ਇਸ ਜਗਤ ਦੇ ਵਿਚ ਕਿਤਨਿਆਂ ਵੀ ਭਾਸਾ ਆਈਆਂ, ਕਿਤਨਿਆਂ ਚਲ  
ਰਹਿਆਂ ਨੇ, ਕਿਤਨਿਆਂ ਨੇ ਹੋਰ ਆਣਾ ਹੈ, ਕਿਤਨਿਆਂ ਹੀ ਨਖ਼ਲਾਂ  
ਆਈਆਂ, ਚਲੀ ਗਈਆਂ, ਚਲ ਰਹਿਆਂ ਨੇ, ਆਣ ਗੀਆਂ, ਚਲੇਧਾ ਜਾਣਾ

है । सारेया ने ही चला जाणा है, पर उस परमात्मा ने निश्चिल और अटल अवस्था ने आपणी जगह स्थिर है उसने रहणा है । उस भेद नूँ ही प्रगट करन वास्ते उन्हाने इस रामचरित्रमानस दी रचना कीती और इस कथा दे जरिये शुरू दे विच ही उन्हाने स्पष्ट कर दिता, कि मैं कोई कथा नहीं लिखदा, मैं कोई कहाणी नहीं लिखदा, मैं जिस राम दी गल करदा वां न, ओ पारब्रह्म ईश्वर सतिगुरू है और ओ घट - घट दे विच रमया होया है । “राम न सकहिं राम गुण गाई ।” ऐ राम दशरथ दा पुत्र वी उस नाम दे गुण नहीं गा सकदा । “तात राम नाहि नर भूपाला भुवनेश्वर कालों का काला ।” यानि कि ओ कालां दा वी काल अकाल है ऐ भुवनेश्वर यानि इक पृथ्वी दा राजा भगवान श्री रामचन्द्र ओ मेरा राम नहीं है, मैं ते उस रमईये, उस राम दी गल कर रेहा हां जिसने जड़ और चेतन सबनूँ आधार दे रखया है और इस तरीके दे नाल उन्हाने सारे रुहानियत दे गहरे भेद जेडे सन न, उन्हाने इन्हां श्लोकां दे विच प्रगट रूप दे विच की हो रेहा है, इक पात्र जेडा है दूसरे पात्र दी गल कर रेहा है, पर उस गल दे विच उस आराधना दे विच उस राम दी महिमा गाई जा रही है, उस गुरू दी महिमा गाई जा रही है । सारी रचना दे विच सिर्फ गुरू, सत्संग है और नाम है, ऐ तिनों ही लफज पूरी रामायण दे विच मौजूद हन ।

हर जगह, हर कोने दे विच तुसी किसी श्लोक नूं पढ़ करके देख लो, बहुत सारा समय चाहिदा है इस रामायण दे भेद नूं उद्घाटन करन वास्ते, जाहिर करन वास्ते, समय दी मर्यादा है, ऐ सारा भेद थोड़े समय दे विच नहीं दिता जा सकदा, पर इस इक चीज नूं प्रगट रूप विच जाण लो, कि तुलसी दास जेडे सन, पूर्ण संत सन अगर असी उन्हाँ दा भेद जाणना चाहंदे हाँ, उस मान सरोवर दे दर्शन करने चाहंदे हाँ, कि जरूरी गल है कि सानूं जेडा भेद उसदे विच रखया गया है, पूर्ण सतिगुराँ दी टेक लईये, उन्हाँ दी चरनी लगिये, ते ओ जरूरी गल है ऐ सारा भेद वी दे देंणगे और समझा वी देंणगे, कि किस तरीके दे नाल इस रस्ते नूं तय करना है । इस रस्ते नूं तय करन वास्ते, इस जड़ और चेतन दे विच्छों निकलण वास्ते “नौ दर ठाके धावत रहाए दसवें निज घर वासा पाए । ओथे अनहंद सबद वजहि दिन राती गुरमती सबद सुणावणिया ।” गुरु नानक देव जी ने वी आपणी वाणी दे विच बिल्कुल स्पष्ट कीता है, कि किस तरीके दे नाल ओ नौ द्वारा नूं स्थिर करके, 14 वस्तुओं नूं स्थिर करके, ऐ जीवात्मा जदों जड़ और चेतन लोक दे विच्छों निकलदी है, ऐ सफर केड़ा है, ऐ पैर दे अंगूठे तों शुरू होंदा है और अखाँ दे विच जा करके खत्म हो जांदा है । खत्म होंण दा भाव ऐ है कि ऐ शरीर दा जेडा सफर है ऐ अखाँ दे पिछे जा

करके खत्म हो जांदा है । उस तों बाद इस जीवात्मा ने इस चोले नूँ छड़ देंगा है यानि कि इस शरीर दे विच्चौं निकल करके बाकी दी रचना जेझी रची गई है, बाकी दे जेझे ४ मण्डल होर हन, इस मण्डल नूँ छड़ करके इसनूँ तय करना है इस सफर नूँ । पर ऐ किस तरीके दे नाल हो सकदा है, ऐदे विच उन्हाने स्पष्ट कीता है उसदा आधार, तुलसीदास जी ने वी कहा है उसदा इक गुण है । केड़ा गुण है ? इक नाम दा गुण है, इक रूप दा गुण है । नाम किसनूँ कहा है ? आवाज नूँ । रूप किसनूँ कहा है ? प्रकाश नूँ । यानि कि उस अनामी ने ऐ रुहां ब्रह्म नूँ दितियां सन, ते ऐ रुहां रोंण लग पईयां, “भई असी तेरे तों अलग नहीं होंणा चाहंदे, असी तेरे नाल रहणा चाहंदे हां, तेरे विच मिलणा चाहंदे हां, इस आनन्द अवस्था नूँ छड़ करके असी इस निचले लोकां दे विच जा करके क्या करागे ? सानूँ इस दुखी अवस्था विच क्यों तुसी भैजणा चाहंदे हो ?” उस वेले अनामी ने प्रसन्न हो करके ऐ वर दिता, कि असी तुहानूँ होका देवागे यानि हक दा नारा लगावागे । ऐ हक की है, हक सच है । सच की है ? परमात्मा । परमात्मा नूँ सच क्यों कहा है ? क्योंकि उसने रहणा है, बाकी जिसनूँ असी परमात्मा समझ रहे हां न, इस काल नूँ ऐ नकल दी इक नकल है, इसने नष्ट हो जाणा है, इसने खत्म हो जाणा है । इस जगह की सी अगर इसदी खोज करागे, ते बहुत सारियां स्टेटमेंटा॑ साडे सामणे

आण गीयां, असी फैसला ही नहीं कर सकागे, कि इस जगह  
ते की सीगा ! यानि कि इक कल्पना हो जायेगी, किस्दी ? सौ  
साल पहले दी । इसदा भाव की है कि सृष्टि हर पल, हर घड़ी  
बदल रही है, हुण इस दृष्टांत दा मतलब की है, जिस भगवान  
नूं श्री रामचन्द्र जी नूं असी भगवान कह करके इस जगत दे  
विच पूजा करदे हां, ऐ चौकड़ी युग चल रहे ने । चौकड़ी युग  
की है? ब्रह्मा दी इक गणना है । किस तरीके दे नाल समय  
नूं व्यतीत कीता जांदा है यानि कि त्रेते युग दे विच भगवान श्री  
रामचन्द्र जी ने अवतार लेया सीगा । क्यों लेया सीगा ? ऐ भेद  
वी अज गुरु साहब प्रगट करदे ने आप जी दे सामणे, कि ओ  
इस करके लैंणा पेया सीगा, ओ पहला जेड़ा सीगा ओ सतियुग  
सी । सतियुग दे विच जेड़ी वी जीवात्मा इस लोक दे विच  
मौजूद सन, ओ सारियां दी सारियां सत करम करदियां सन  
यानि कि इस जगत दे विच संत मौजूद सन जद दी सृष्टि है  
। अगर संत नहीं होंणगे न, तुलसीदास जी ने स्पष्ट कहा है, ऐ  
सृष्टि दे विच प्रलय आ जायेगी यानि कि हाहाकार मच  
जायेगा, जड़ - चेतन लोक जो है खत्म हो जायेगा । इस  
करके याद रखणा प्रलय दा भाव ही ऐ है कि संतां ने ऐ सृष्टि  
विच आणा छोड़ दिता या सृष्टि दे विच्चों चले गये ने । अगर  
सृष्टि चल रही है न, ऐ ताकत कौंण दे रेहा है इस काल नूं ?

ओ सतिगुरु ताकत दे रेहा है । यानि कि सतिगुरु संत मौजूद ने, उन्हाँ दी ताकत नाल ही ऐ जड़ - चेतन लोक चल रेहा है । ते उस वक्त सारे ही सत करम करदे सन, ते रुहाँ बड़ी दे नाल आपणे घर वापस जादियाँ सन, अनामी दे दिते गये वर यानि कि जेड़ा होका दिता सी नाम दा, कि असी तुहानूं आवाज लगावागे, ओ आवाज जेदे विच प्रकाश वी है ते तुसी आपणे घर ओदे पिछे चल के इस अखाँ दे नाल देख करके आपणे घर वापस आ जाणा है । उस आवाज दे करके (कारण) ऐ रुहाँ जेड़ियाँ सन सचखण्ड जा रहियाँ सन, उस वेले काल जो सी स्थिर अवस्था दे विच सी । क्यों ? क्योंकि उसदा कोई जोर नहीं सी चलदा, सारे ही जेडे सन मन दे हुक्म विच नहीं सन, आपणे सतिगुरु संताँ दे हुक्म विच सन । उसदे बाद की होया, जिस वेले त्रेता युग शुरू होया उस वेले बहुत सारियाँ जीवात्मा जेड़ियाँ सन न, स्वादाँ दे विच फँस गईयाँ क्योंकि भौतिक स्वाद जेडे इस जगत दे विच मौजूद सन, ओ जो विचार करके देखो फैलण लग गये, फैलाये किसने सन ? इस मन ने फैलाये सन, इस मन ने ऐसा स्वाद दिता कि जीवात्मा जो है ऐ इन्द्रियाँ दे भोग दे विच ऐसे स्वाद लाण लग पर्झ कि इसदे करम बणन लग गये, झूठी क्रिया बणन लग गई और इस लोक दे विच ऐ सारे पिंजरेयाँ नूं कायम रखण लई उस

काल ने इक नियम दिता है, मौत दा इक नियम दिता है करम  
दा यानि के करम दा बदला करम और कोई वी चोला है  
निश्चित सीमा तक यानि कि मौत दा डंका हर जीवात्मा दे ऊपर  
जदों वी ओ जन्म लैंदी है किसी वी लोक दे विच, किसी वी  
जून दे विच यानि कोई वी चोला लै करके उसदी मौत दी घंटी  
उसदे सिर ते वजण लग जांदी है । हर पल, हर घड़ी ऐ मौत  
दी घंटी उसदे नजरीक आंदी है, पर जीवात्मा नूँ खबर नहीं ।  
क्यों ? क्योंकि ओ झूठे स्वादा विच फँसी होई है मन करके  
और उसदे स्वाद लगांदी है न, उसदे नाल ऐ झूठी क्रिया दे नाल  
करम बणदे ने । ऐ करम की ने, ऐ करम जेडे ने भोगणे पैंदे  
ने, स्वाद उसदा हिसाब देंणा यानि कि किमत चुकाणी पैंदी है  
! मत कोई जाणना कि सानूँ जेडिया वस्तुआं, संबंध मिले ने  
ऐ सानूँ फ्री विच मिले ने ! कोई वी वस्तु या कोई वी संबंध फ्री  
विच नहीं मिलदा, सब लैण - देण दे संबंध ने । “फरीदा कित्थे  
तेरे माँ पिओ जिन्हु तूँ जाणिओ ।” बाबा फरीद जी ने कितने  
प्यार नाल कहंदे ने, ओ तेरे माँ - बाप और संबंधी कित्थे चले  
गये, जित्थे तक जेदा संबंध सी न, उसने आपणे संबंध नूँ  
निभाया, कर्जा देणा सी ते कर्जा दिता, कर्जा लैणा सी ते कर्जा  
लेया और लै करके आपणे टुरदे बणे, तुसी चाह करके किसी  
नूँ रोक नहीं सकदे । असी कहंदे हाँ कि इस जगत ने सानूँ

बंध रखया है, गुरु साहब उपदेश करदे ने, कि तुसी जगत विच  
बंध सकदे ही नहीं ! क्यों नहीं बंध सकदे, क्योंकि जीवात्मा  
जो है उस अनामी दा अंश है, ओ इस जगत दे विच रल सकदी  
नहीं । सिर्फ हो की रेहा है, इसदे ऊपर पर्दे पाये जा रहे ने,  
इसदे ऊपर करमा दी मैल जेडी है ओ थोपी जा रही है यानि  
कि जितने वी स्वाद लैंदी है जिसदा भुगतान करना पैंदा है और  
उस तों बाद जदों वी इसनूं जन्म दिता जांदा है इक चोले तों  
बाद, ते ऐ ब्रह्म दे विच जेडी बीज सरूप कीती गई क्रिया दा  
बन्धनकारी प्रभाव जमा सी न करमा दे रूप दे विच, ओदे  
विच्यों कुछ करम लै करके न इस जीवात्मा नूं अगली जूना  
विच जन्म दे दिता जांदा है । ओ उत्तम भोगी जूना वी हो  
सकदिया ने यानि निचलिया निकृष्ट जूना वी हो सकदिया ने  
यानि कि जैसी वी क्रिया कीती सी न, वैसा ही उसनूं जन्म  
दिता जांदा है । इसदा इक उदाहरण सतिगुरु दे रहे ने, कि बड़े  
ध्यान नाल ऐनूं देखो, कि इक माँ है, ओ औलाद वास्ते तडफ  
रही है, उसनूं औलाद नहीं है । ओ बच्चा मंगदी है, बच्चा -  
बच्चा करदी आखिरी घड़ी तक ओ बिना औलाद दे चली गई  
। उस वेले काल की करदा है, उसदी इस तृष्णा नूं पूर्ण करन  
वास्ते उस जीवात्मा नूं सूर दी जून देंदा है । ओ सूअर दी जून  
क्यों देंदा है क्योंकि उसदे अन्दर हवस सी, इक कामना सी

बच्चे दी, बच्चे दी प्राप्ति होंणी चाहिदी है । ऐ काल इतना फिजूल खर्च नहीं है, कि इस मनुखे जन्म दे बाद फिर मनुखा जन्म ही दे देगा । ओ जन्म देगा कामना दे अनुसार, इच्छा दे अनुसार, स्वाद दे अनुसार, बेशक ऐ जीवात्मा पूर्ण संतां और पूर्ण सतिगुरां दे कोल ही क्यों न होवे यानि कि अगर कामना मौजूद है, ऐ उसदे बन्धन दे प्रभाव तों बच नहीं सकदा और सतिगुरु जेड़े ने, संत जेड़े ने, न ते ओ कीते दे विच मेख मारदे ने, न कमाई नूं बदलदे ने । जैसी वी कामना लै करके जीवात्मा कमाई करदी है उसदा भुगतान इसनूं जरूर देंणा पैंदा है यानि कि असी उस तों बच नहीं सकदे । ओ काल जो है फिजूल खर्च नहीं है, ओ कामना नूं पूरा करन वास्ते ऐ जीवात्मा नूं सूर दी जून क्यों देंदा है क्योंकि हर 6 महीने बाद 15 - 15 बच्चे जम देंणगे । कीचड़ दे विच लिबणदा रहणा है और ऐ सारी ममता जेड़ी है उसने दूर करनी है और तद तकण उसनूं सूर दी जून विच्चों नहीं कडया जांदा । बार - बार कीचड़ विच बच्चेयां नूं जन्मदी है और मरदी है जद तकण उसदी ऐ कामना पूरी नहीं हो जांदी । साथ - संगत जी, विचार करके देखो मनुखे जन्म विच आ करके अगर जीवात्मा ने इस तरीके दी कामना रख करके, ऐसी स्वाद और बुद्धि लै करके अगर पूर्ण सतिगुरां दे कोल वी चले गये, ते क्या लाभ खटया ! हुण विचार

करन वाली गल है, कि त्रेते युग दे विच भगवान श्री रामचन्द्र जी दा अवतार इस काल दा ही अवतार सी । क्यों अवतार लिता गया, क्योंकि संतां ने उस अकाल पुरुष नूं राम कह करके याद कीता सी और राम करके ही उसदा प्रचार कीता और हर जगह, हर जीवात्मा राम - राम करदी सी यानि कि उस रमईये राम जिसने सब जड़ - चेतन नूं आधार दे रखया है, उसने बड़ी चतुराई दे नाल इक चलदा - फिरदा राम इस धरती ते अवतरित कर दिता और सारी ताकत आपणी दे दिती प्रदर्शन करन वास्ते । प्रदर्शन क्यों करना पेया, क्योंकि जीवात्मा नूं भ्रमाण दा और कोई साधन है ही नहीं सी, क्योंकि उसने काल ने इक वर वी लेया सी उस अनामी कोलों, कि संत जदों वी इस लोक विच आणगे, ओ कदी करामात नहीं दिखाणगे । अगर संत चाहवण ते साध - संगत जी, क्या नहीं कर सकदे ! “पारब्रह्म ईश्वर सतिगुरु” यानि कि सतिगुरु जेडा है पंजवें मण्डल दा अधियाता है उस पंजवें मण्डल दा, उस अकाल पुरुष दा हुक्म लै करके इस जगत विच आया है । क्यों आया है ? इन्हां जीवात्मा दी फरियाद नूं पूरा करन वास्ते, जेडी इन्हाने कही सी, असी वापस आपणे घर जाणा चाहंदे हां । तां साध - संगत जी, ऐ घर साडा नहीं है ! असी पराये देश विच बैठे हां, सानूं कैद कर लिता गया है । इस कैद तों

निकलना है और इस कैद नूं कायम करन वास्ते ही उसने काल ने चलदा - फिरदा राम 10,000 और 10 साल तक इस जगत दे विच छतर चलाया और मर्यादा नूं कायम कीता । मर्यादा दा की भाव सी, कि लैण - देण दा संबंध, जन्म - मरन दा संबंध यानि के चाहे तुसी अच्छा करम करो, चाहे माझा करम करो, पर करो जरूर ! वर्ण - श्रेणियां बणा दितियां, वर्ण - श्रेणियां बणा करके करमां दी तबदीली कर दिती और अच्छा और बुरा करम करा करके, कई तरीके दे जप, कई तरीके दे तप, कई तरीके दे तीरथ और कई तरीके दीयां ऐसियां क्रियावा चला दितियां इस जगत दे विच, कि इस वक्त असी साढे 25 लख साल हो गये ने भगवान श्री रामचन्द्र जी दे अवतार नूं गया, साढे 25 लख साल मायना रखदा है । सतिगुरा ने जो बचन कीते ने, कि 100 साल दा इतिहास इस जगह दा सानूं पता नहीं, ते साढे 25 लख साल दा इतिहास किस जीवात्मा कोल है ? यानि कि बाद विच जेडे ऋषि - मुनि आये, उन्हाने कुछ भेद जिस मण्डल तक गये, ओ तकरीबन सारे दे सारे पहले मण्डल तक सहस्रपद कमल तक गये सन, ओत्थे दा ही भेद उन्हाने प्रगट कीता । हुण वेदां दी जेडी बाणी है ओ तीसरे मण्डल दी बाणी है जेडे ऋषि - मुनि ब्रह्म तक गये उन्हाने ब्रह्म दी बाणी दे जरिये इन्हां वेदां दी रचना कर दिती । ऐ

सारी सृष्टि जेड़ी है ब्रह्म तक दी रखना और उसी दे गुण गांदी है, उस तों अगे दा भेद किसे कोल नहीं है । पारब्रह्म दा भेद पारब्रह्म तों आण वाला ईश्वर सतिगुरू, ओ सतिगुरू है जिसदे अन्दर ओ परमात्मा प्रगट है और उसी भेद नूं प्रगट करन वास्ते सत दे रूप दे विच अवतार लैंदे ने । तुलसीदास जी ने जेडे साधु लफज दा इस्तेमाल कीता है “रामचरितमानस” दे विच, ओ साधु कोई भगवे वस्त्र वाला साधु नहीं है, कन पड़वाये वाला साधु नहीं है या और कई तरीके दे यज्ञ - तप करन वाला साधु नहीं है । ओ साधु केड़ा है ? ओ पंजवें मण्डल दा अधियाता साधु है, जिसदा हुक्म लै करके सत्पुरुष दा ओ इस जगत दे विच आया है । किस करके आया है ? ऐ सफर तय करवाण वास्ते, क्योंकि कोई वी जीवात्मा आपणे आप इस सफर नूं तय नहीं कर सकदी । क्योंकि अनगिनत युगां तों ऐ सृष्टि कद तों चल रही है इसदा इक छोटा जेया अन्दाजा असी इस तरह लगा सकदे हां । इक कल्प दा ब्रह्मा दी रात है और इक कल्प दा ब्रह्मा दा दिन है और ऐ कल्प की है ? 998 चौकड़ी युग । इक चौकड़ी युग कितना है ? 12,000 साल देवतेयां दा और देवतेयां दा इक दिन और इक रात मनुखे जन्म दे 365 दिन ने । साध - संगत जी, ऐसी भयानक काल दी रखना रची होई है जरा विचार करके देखो असी चाह करके

वी इस रचना तों बाहर नहीं निकल सकदे । जेडे हथ - पैर  
असी मार रहे हां, ऐ सारे दे सारे हथ - पैर झूठे ने ! क्यों ?  
क्योंकि ऐ मन मरवा रेहा है । कित्ये मरवा रेहा है विचार करके  
देखो, पाणी नूं रिडकण दे नाल कटी मक्खन नहीं निकलया  
और ओ पाणी नूं रिडकवा रेहा है यानि असी जल नूं लै करके  
देवता बणा करके उसदी पूजा कर रहे हां, सूरज दी पूजा कर  
रहे हां, जड़ वस्तुआं दी पूजा कर रहे हां । हुण विचार करके  
देखो, इन्हां जड़ वस्तुआं दे पिछे कोई ताकत कम कर रही है  
कि नहीं ! अज तक सूरज नूं किसे ने इक घड़ी अगे पिछे वी  
कदे देखया ? पृथ्वी नूं आपणी जगह तों हटदेया किसी ने  
देखया ? जितनी वी वस्तुआं ने किसी न किसी अज्ञात हुक्म दे  
विच चल रहिया ने । साध - संगत जी, ऐ सारी ताकत कौंण  
दे रेहा है ? ऐ पारब्रह्म ईश्वर सतिगुरु दे रेहा है क्योंकि ओ  
अनामी जो है आपणी धुन दे विच मस्त है और उसदी जो  
नकल है ओ अकाल, ओ वी निश्चल अवस्था दे विच आपणी  
धुन दे विच मस्त है । उसने ऐ सारे खेल नूं रचाया जो है,  
आपणी ताकत सतिगुरु दे अर्धीन दिती है यानि कि जेडा वी  
कम कीता जायेगा सतिगुरु दे अर्धीन ही कीता जायेगा । हुण  
सतिगुरु नूं असी शरीर समझदे हां, आकार समझदे हां, तां संत  
जेडे ने ओ आकार नहीं ने, पर ऐ विचार करके देख लो, कि

संत जेडे ने ओ पूर्ण होंणे चाहिदे ने यानि कि पारब्रहम सचखण्ड दे वासी । हुण जेडे संत पूर्ण होंदे ने, ओ आपणे आप नूं प्रगट ही नहीं करदे, ओ किसे नूं कहंदे नहीं, साध - संगत जी, उन्हानूं कहण दी जरूरत वी की है, जिसदे अन्दर ओ परमात्मा प्रगट है, ओ परम चेतन सत्ता जेडी है उसदे अन्दर कम कर रही है, ते उसनूं किसी नूं कहण दी की लोड है, आपणी पूजा कराण दी की लोड है ! यानि कि धूप - बत्ती दी जरूरत किसनूं है जरा विचार करके देखो, क्या मनुख नूं इसदी जरूरत है ? मनुख नूं उसदी जरूरत नहीं है, क्योंकि ओदे विच जेडी चेतन सत्ता कम कर रही है, ओ हजार - करोड़ां धूप - बत्तियां तों बद के हैं । कोई वी जीवात्मा जेडी है अगर निकल जाये, ते मिट्टी है और ऐ सारियां जड़ वस्तुआं दे नाल पूजा करके असी जीवात्मा नूं न रोक सकदे हाँ, न उसदी उत्पत्ति कर सकदे हाँ, ते फिर ओनूं ऐदी जरूरत ही नहीं है । ते फिर जरूरत किसनूं है ? पौथियां नूं जरूरत है, मूर्तियां नूं जरूरत है, इन्हां पाणीयां नूं जरूरत है, सूरज देवता नूं जरूरत है यानि कि जितनियां वी ऐ अधूरियां ताकतां ने न उन्हानूं जरूरत है । क्यों ? उन्हां दे अन्दर चेतन सत्ता मौजूद नहीं है और जेडा पारब्रहम ईश्वर सतिगुरु है न ओ परमात्मा दा रूप है, उसदी दरगाह ते जा करके देखो, किसी धूप - बत्ती दी जरूरत नहीं,

कैसी सुगंधि फैली होई है, कैसे चारों पासे फुल ने यानि इक पासे असी फूल तोड़दे हाँ, फूल दे अंदर वी जीवात्मा है । गुरु रामदास जी ने स्पष्ट कीता है “भ्रम भ्रम फूल तौरावै” यानि कि कैसा तूं भ्रम दे विच भुलया बैठा हैं, कि इक फुल नूं तोड़ के इक निर्जीव वस्तु नूं खुश करन विच लगा होया हैं और तूं सोच रेहा हैं परमात्मा तेरे तों खुश हो जायेगा ! परमात्मा चेतन है और चेतन दा ही अंश इस वनस्पति दे विच है यानि कि इक फूल नूं तोड़ के असी इक अपराध कीता और ओनूं भेंटा कित्थे कर रहे हाँ, इक जड़ वस्तु दे अगे यानि इक मूर्ति या पौथी दे अगे ! उसनूं जरूरत है क्योंकि उसदे अंदर चेतनता है ही नहीं यानि इक चेतनता नूं जड़ तों आपणे मूल तों अलग करके असी जड़ वस्तु नूं प्रसन्न करन लगे हाँ, ते ऐ सफर कदों तय होयेगा और किस तरीके दे नाल तय हो जायेगा, ऐ बड़े विचार करन वाली गल है ! तुलसी दास जी ने बिल्कुल स्पष्ट कीता है, गुरु नानक साहब जी दी बाणी ओ ही है यानि कि जितने वी संत इस जगत दे विच आये ने, सबने इकको ही गल कही है कि आपणे घर चलो ! ऐ मुल्क तुहाडा नहीं है । तुसी विदेशां दे विच बैठे हो, तुहानूं कैद कर लेया गया है । तन और मन दा पिंजरा हर लोक दे विच तुहाडे नाल है, इस लोक नूं त्याग करके आपणे असल लोक विच चलो ! क्यों ?

ऐ जीवात्मा अविनाशी उस अकाल पुरुख दा अंश है और ओत्ये  
जा करके ही इस जीवात्मा नूँ सदा लई अमर पद ढी प्राप्ति  
होंदी है । ऐ कदों होंदा है जदों ऐ जीवात्मा जड़ और चेतन  
संबंध दे लोकां विच्चों निकल करके, नौ द्वारे खाली करदी है  
यानि कि पैर दे अंगूठे तों ऐ आराधना शुरू होंदी है । पर उस  
तों पहले गुरु साहब उपदेश करदे ने, कि किस तरीके दे नाल  
रामायण दे विच असी ऐ कह ते दिता, कि रामायण दे विच  
भेद ने, पर ऐ किस तरीके नाल जाण सकदे ने ? पूर्ण सतिगुरा  
दे चरणी लग करके । इक उदाहरण सतिगुरु दे रहे ने ओदे  
नाल ऐ स्पष्ट हो जायेगा, कि किस तरीके दे नाल तुलसीदास  
जी ने इस रचना दे विच गहरा भेद जो है जाहिर कीता है ।  
जदों दशरथ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने बनवास आपणे पिता दे  
हुक्म दे विच आ करके 14 साल दा बनवास लेया और निकल  
गये ने राज महलां तों, उस वक्त उन्हां दे जो छोटे भाई साहब  
सन यानि कि भरत उन्हानूँ मनाण वास्ते गये ने । जदों मनाण  
वास्ते चित्रकूट दे जंगल दे विच पहुँचे ने, मना रहे ने उन्हानूँ  
बहुत तरीके दे नाल मनाया है, “कि मेरा अधिकार बणदा है,  
लक्ष्मण नूँ तुसी वापस भेज देओ, ते मैं तुहाडे नाल जंगल दे  
विच चलागा । पहली गल तै है तुसी आपणा राजपाट सम्भालो,  
मैं जो है बनवास करदा वां ।” उस वक्त भगवान श्री रामचन्द्र

जी ने इक जवाब दिता सी, कहण लगे, “हे भरत ऐ जो राम है न, ऐ राम अपने हाथ से अपने शरीर की चमड़ी उतार करके अपने पिता दशरथ की पादुकायें भी बना ले न, तब भी वह अपने पिता के ऋण से अऋणी नहीं हो सकता ।” हुण ऐ जेडे श्लोक इस्तेमाल कीते तुलसीदास जी ने, ऐ किसदे लई इस्तेमाल कीते ने यानि कि ऋण तों अऋणी होंणा भगवान् श्री रामचन्द्र जी दा, ऐ किसनूं दर्शा रहे ने, इसदे विच गहरा भेद ऐ है, ऋण तों अऋणी होंण दा भाव ऐ है, जदों इक शिष्य आपणे अंतर दे विच नौ द्वारे खाली करके ऐ सफर तय करके दसवें द्वार दे विच आपणे संत सतिगुरु दे नूरानी रूप दे दर्शन करदा है और उन्हाँ दे शब्द रूप तक पहुँचदा है । जदों पारब्रह्म दे विच जा करके शब्द रूप प्रगट होंदा है, उसदे नाल जदों ऐ जीवात्मा मिलदी है उस वक्त उसनूं सारा ऐ भेद पता चल जांदा है, कि कितने अनगिनत जन्म इस जीवात्मा ने पहले लये सन यानि कि शिष्य ने पहले कितने जन्म लये और पूर्ण सतिगुराँ ने कितने करोड़ जन्माँ दे विच उसदा साथ दिता, केड़ी - केड़ी विपदा दे विच्छों उसनूं कडया, केड़े - केड़े नरक दे विच्छों उसनूं कड करके लै के आये । यानि कि ऐ सारी वस्तुआं जेडियाँ ने न, ऐ सारी क्रिया उसनूं याद आ जादियाँ ने । यानि कि उस तों ऐ आपणे आप नाल मिलाण वास्ते ऐ मनुखा जन्म

दिता और उस मनुखे जन्म नूं प्रगट किस तरह कर रहे ने  
एहसान नूं। इक शिष्य आपणे गुरु दे एहसाना दे बदले इक  
तुक उच्चारण कर रेहा है, कि आपणे शरीर दी चमड़ी दे नाल  
अगर मैं आपणे गुरु दी इक पादुका वी बणा दा, ते मैं गुरु दे  
त्रृण तों अन्नणी नहीं हो सकदा। यानि कि पिता दशरथ दी  
जगह गुरु लगा दो और भगवान श्री राम दी जगह शिष्य लगा  
दो, ते ऐ तुलसीदास जी दा भेद प्रगट हो जायेगा। ऐ भेद किसी  
ने अज तक प्रगट कीता है? किसी नूं समझ आया है? इस  
भेद दा किसी नूं नहीं समझ आया, अख बंद करके राम - राम  
कर रहे हाँ, पता ही नहीं किस राम दी गल तुलसीदास जी ने  
कीती है! आखिर दे विच उन्हाने बिल्कुल स्पष्ट कर दिता, कि  
तुलसी दा राम रमईया है ओ घट - घट दा ऐ न देखण दा  
विशय है, न सुणन दा विशय है, याद करो, साढे 25 लख साल  
पहले हो भगवान श्री रामचन्द्र किस तरह देखे और सुणे जा  
सकदे ने, उसनूं वी उन्हाने बाकी दी तुकां दे विच प्रगट कीता,  
कि किस तरीके दे नाल ऐ जीवात्मा नौ द्वारे खाली करके दसवें  
द्वार पहुँचदी है न, तां जा करके ओ मेरे राम नूं यानि कि जो  
तुलसी दे राम नूं ओ परमात्मा पारब्रह्म ईश्वर उसनूं देख सकदी  
है और सुण वी सकदी है। ऐ देखण और सुणन दा भाव की  
सींगा तुलसीदास जी दा, ओदे विच बिल्कुल ऐ भाव सी, ओ

जो अनामी ने हक दा होका दिता है, उसदे विच इक आवाज और इक प्रकाश है और ऐ आवाज और प्रकाश सिर्फ जीवात्मा ने देखणी है, ऐ शरीर दा विशय नहीं है यानि कि आत्मा ने ऐ नौ छारे दा रस्ता तय करके इस सफर नूं तय करके दसवें द्वार दे विच ओ परमात्मा दे गुण नूं जिसने जड़ और चेतन सबनूं आधार दे रखया है न, उसनूं प्राप्त करना है । किस तरीके दे नाल ? निरमल और निश्चल हो करके दसवें द्वार पहुँच करके ओत्थे जा करके ऐ जीवात्मा दी ताकत मिलदी है इसनूं निरत और सुरत दी । निरत दे नाल इसने उस परमात्मा दे गुण नूं देखणा है और सुरत दे नाल उस परमात्मा दे गुण नूं सुणना है और विचार करके देखो, अगर खाली आवाज आ रही होवे और अगर असी रस्ता तय करना चाहिए, चारों पासे अंधकार है, उस अंधकार दे विच सानूं direction ते पता लग जायेगी, कि आवाज किस direction तों आ रही है, पर असी रस्ता तय नहीं कर सकदे । क्यों ? चारों पासे अंधकार है, अगे जावागे पता नहीं कोई खड़ा आ जाये, कोई दरिया आ जाये, कोई झाड़ी आ जाये, पलट के विच गिर जाईये और मर जाईये यानि कि जीवात्मा अंधी और बहरी है, अंदर जा के इस रस्ते नूं वी तय नहीं कर सकदी । फिर उसदे लई की है, इक प्रकाश दी लोड है यानि कि जिस पासों आवाज आ रही है न, अगर

साडे हथ दे विच लालटेन आ जाये और कोई दीया मिल जाये  
यानि कि रोशनी आ जावे फिर अस्त्री आपणे रस्ते नूं तय कर  
लवागे और तुलसीदास जी ने जेडा तय कराया ऐ रामायण दे  
विच, ओ ऐ ही रस्ता है। ऐ सफर है इस पैर दे अंगूठे तों लै के  
जदों जीवात्मा दोनों अखाँ दे पिछे दसवें ढार पहुँचदी है उस  
वक्त ओ अंधी और बहरी दा जो उसदा अंधापन है दूर हो जांदा  
है, उसनूं प्रकाश दे दर्शन होंदे ने और आवाज सुणाई देंदी है  
और इन्हाँ दोनाँ गुणाँ दे जरिये इसी नूं उन्हाने राम कह करके  
पुकारेया है, कि मेरा राम इक गुण दे रूप दे विच पूरे जड़ और  
चेतन नूं आधार दे रेहा है। इस तरीके दे जरिये जीवात्मा सुरत  
दे जरिये सुणदी है और निरत दे जरिये देखदी है और आपणा  
रस्ता तय करदी है और साथ - संगत जी, कदे वी ऐ सारा रस्ता  
ऐ जीवात्मा आपणे आप तय नहीं कर सकदी। क्यों ? ओ  
काल जो है पूरी ताकत लै करके सारियाँ रिद्धियाँ - सिद्धियाँ  
लै करके इस जगत दे विच जिन्हानूं अस्त्री गुरु बणा करके  
बैठे हाँ न, जितने गुरु प्रगट होये ने न, ऐ सारे रिद्धियाँ -  
सिद्धियाँ दे अर्थीन ने यानि कि रिद्धियाँ - सिद्धियाँ ने उन्हानूं  
ठग लेया। 1 दे 2 बणा देंणे या इक वस्तु तों कोई तीसरी वस्तु  
पैदा करके दिखा देंणी साथ - संगत जी, ऐ ते मदारी दा खेल  
है ! मदारी वी की करदा है, 2 तों 4, 10 तों 20 बणा देंदा है,

सैकड़ों ही बणा देंदा है, पर ओ भुखा मरदा है, ओनूं टिकट दे  
पैसेयां दी लोड है । क्यों ? क्योंकि असल दे विच नहीं बणा  
रेहा ! असल विच ओ 2 दे 2 ही ने, बाकी सब नकल है यानि  
कि असल नूं नकल बणा के दिखा रेहा है, भ्रमा रेहा है, उसे  
तरीके दे नाल ऐ जीवात्मा लुटी जा रही है । इस जगत दे विच  
ईटां दी ते कमी हो जायेगी, पर गुरुआं दी कमी नहीं होयेगी !  
ईट चुकको ते गुरु मिलणगे इतने गुरु मौजूद ने ! यानि कि  
*calculation* दे जरिये या कुछ रिछि - सिछि ताकता दे जरिये  
ओ जीवात्मा नूं भ्रमाण दा कम कर रहे ने और ऐ सारिया  
ताकता जेड़िया ने इस काल पुरुष दीया बकरीया होईया ने ।  
इस जगत दे विच इन्हानूं भ्रमा करके अगर कोई इन्हां विच्चों  
निकल करके दसवें द्वार पहुँचदा वी है, ते ओत्थे इतनिया  
भयानक ताकता मौजूद ने कि कोई जीवात्मा जेड़ी है बिना  
वड्डी ताकत लये उसनूं पार नहीं कर सकदी । इस करके जेड़े  
पारब्रह्म ईश्वर सतिगुरु आंदे ने ओ महान ताकत लै करके  
आंदे ने जेड़ी इस काल तों वी कई गुणां वट के होंदी है । इस  
काल नूं वी ओ ताकत देंदे ने, इस करके ओ जीवात्मा नूं हर  
पौढ़ी, हर पहरे ते होशियार करदे होये इस जगत दे रस्ते नूं तय  
करवादे ने । किस तरीके दे नाल ? ऐ नौ द्वारा विच्चों खाली  
करदे ने दसवें द्वार पहुँचादे ने उसे तरीके दे नाल बाकी दे ५

मण्डल वी पौढ़ी दर पौढ़ी चढ़वादे होये इस जीवात्मा नूं उस सतिनाम दी गोद विच लै जादे होये पूर्ण बणा देंदे ने, अमर पद दी प्राप्ति होंदी है । यानि कि ऐ जीवात्मा कदों सुखी होयेगी ? कदों अमर होयेगी ? जदों सचखण्ड उस अकाल - पुरुख दी गोद विच पहुँच जायेगी । ओत्थे जा के की होयेगा, ओत्थे जा के इसनूं बाकी दी 4 सूरजां दी वी ताकत मिलेगी । जिस वेले अंतर दे विच ऐ पहुँचदी है, उस मानसरोवर दे ऐ दर्शन करदी है, इस्वान करदी है न, उस वेले ऐ सारे आवरण, सारियां प्रकृतियां, सारियां मैलां धुल जादियां ने, ऐ जीवात्मा नंगी हो जांदी है यानि कि ऐदा लिंग - भेद खत्म हो जांदा है और इसदी आपणी ताकत जेडी 12 सूरज दी है ओ प्रगट हो जांदी है । साथ - संगत जी, विचार करके देखो कितने शर्म और तरस दी गल है, ऐ जीवात्मा तङ्फ रही है, असी इन्हां अखां दे नाल इक सूरज नूं नहीं देख सकदे, पर जिस वेले ऐ अंतर दे विच उस मानसरोवर दे दर्शन करदी है, स्वान करदी है उसदे 12 सूरज प्रगट हो जादे ने । कैसी भयानक रोशनी इसदे अंदर ताकत मौजूद है, इक सूरज दी ताकत ऐ सारे जड़ लोक नूं चला रही है, ते 12 सूरज दी आपणी ताकत और अख बंद करो इस अंधेरे विच बैठे हां, अज तक अंधेरा है ! कदी असी इस सफर नूं तय करन दी कोशिश कीती ? कदी इस अंधकार नूं

दूर करन दी कोशिश कीती ? नहीं ! यानि कि विचार करो जदों  
ऐ जीवात्मा 12 सूरज दी हौंदी है ताहि इस काबिल बणदी है  
कि उस मण्डल दे विच प्रवेश कीता जा सके जिसनुं असी  
पारब्रह्म ईश्वर कहंदे हाँ । उस ईश्वर दे मण्डल विच प्रवेश करन  
लई इतनी ताकत दी घट तों घट जरूरत है । उस तों बाद रस्ते  
दीयां जेड़ियां रिद्धियां - सिद्धियां ताकतां ने न, रुकावट पाण  
वास्ते उस काल पुरुष ने रखियां ने, उन्हाँ ताकतां विच्छों  
निकलण वास्ते वी इक वड्डी ताकत सतिगुरु दी लोङ है यानि  
कि दसवें द्वार तों पहले महासुन्ध अंधकार दा ऐरिया है, उसने  
उस अंधकार नूं 12 सूरज दी रोशनी विच वी पार नहीं कर  
सकदी यानि कि ओ अकाल पुरुष दे दर्शन इतने आसान नहीं  
ने कि किसी मूर्ति दे अगे धूप - बत्ती दे के असी परमात्मा नूं  
प्राप्त कर लवाँगे ! विचार करके देखो, ऐ जो मनुखा जन्म  
सानुं मिलया है न, ऐ बड़ा कीमती है, किसे दी अमानत दिती  
गई है सानुं, असी उसदी अमानत दे विच ख्यानत पा रहे हाँ  
। किस तरीके दे नाल ? राग और नाद दे विच फँस के सानुं  
उस राग दा नहीं पता जेड़ी रागिनी आलापी गई है, दसवें द्वार  
जा करके उस रागिनी नूं सुण करके देखो, किस तरीके दे नाल  
ओ रागिनी गाई जा रही है, किस तरीके दे नाल ओ अनहट  
नाद गुंजायेमान है, किस तरीके दे नाल ऐ जड़ और चेतन नूं

आधार दे रखया है, किस तरीके दे नाल ऐ सूरज कम कर रेहा है, ऐ अनगिनत ब्रह्मण्ड आपणे धुरे ते छुल रहे ने, पर अज तक टकराये नहीं ! कदों टकरादे ने, जदों ओ अनामी आपणी ताकत नूँ खिंच लैदा है उसनूँ परमात्मा केहा जांदा है । परमात्मा इक ताकत है, उसदी ताकत नूँ प्राप्त करन वास्ते उसदी ताकत दा इक अंश ओ सतिगुरु इस जगत विच आंदे ने अवतार लै करके, उसदे जरिये, उसदे सहारे असी इस सफर नूँ तय कर सकदे हाँ । उसदे अलावा ऐ सफर न अज तक कोई तय कर सकया है और न कर सकेगा । इस करके सारे भ्रमां दे विच्चों निकल जाओ, जद तक ऐ जीवात्मा पौढ़ी दर पौढ़ी चढ़दी इस तरीके दे नाल नौ ढारे खाली करदी होई जद तकण दसवें ढार नहीं पहुँचेगी, आपणे सफर नूँ तय नहीं कर पायेगी । अख बंद होण दे बाद कोई सफर तय नहीं होंदा, अख बंद होण दे बाद ते ऐ काल दी मर्जी है कि जीवात्मा नूँ कित्थे जन्म देगा और किस तरीके दे नाल देगा । जैसी क्रिया कीती गई होयेगी वैसा ही जन्म उसनूँ मिलेगा यानि कि अख बंद करन तों बाद ऐ सफर तय नहीं कीता जा सकदा । उठो ! जागो ! विचार करो ! ऐ घड़ियां निकलियां जा रहियां ने, बचपन निकल गया, जवानी निकल गई, बुढ़ापा पता नहीं असी ऐत्थों उठ के घर वी जावागे कि नहीं जावागे, ऐत्थे ही

असी खत्म हो जाणा है ! सानूं कुछ पता ही नहीं है कि किस तरीके दे नाल असी इस सफर नूं तय कर सकदे हां । इस करके सचखण्ड तों इस बाणी दे विच गुरु साहबां ने सारा भेद प्रगट कर दिता है कि किस तरीके दे नाल ऐ जीवात्मा जो है आपणे सफर नूं तय कर सकदी है और ऐ सफर जेडा है “जीवत मरिअे भवजल तरिअे” जींदे जी गुरु दे जरिये, गुरु दा आधार लै करके उस परम चेतन दे अंश उस परम चेतन दी ताकत लै करके ऐ जीवात्मा आपणे सफर नूं तय कर सकदी है । अख बंद हो गई उस तों बाद सफर तय नहीं होयेगा, जित्थे तक असी तय किता है उसी तों बाद अगे तय करागे, अगले अनगिनत जन्मा दे विच यानि कि पता नहीं कदों जा करके ऐ मनुखा जन्म मिलेगा । 84 लख जामेया दे बाद इक मौका मिलदा है इस जीवात्मा नूं मनुखे जन्म दा यानि कि अगर ऐदी कीमत पाईये, इक जून दी कीमत 2 साल लगाईये, ते कितने करोड़ जन्म लैंण दे बाद इस जीवात्मा नूं मनुखा जन्म मिलदा है । जागो ! पहचानो ! इस मनुखे जन्म दी कीमत नूं ऐ स्वासा दी पूंजी नूं पहचाणों । जेडा स्वास लै के निकल गया न, ऐ दुबारा नहीं आणा, तिनां लोकां दी दौलत देण दे बाद इक स्वास अज तक कोई लै नहीं सक्या । सिकंदर जदों गया सी, उसने केहा सी “इस ताबूत दे विच्चों मेरे हथ बाहर कड देओ

ताकि संसार देख सके, कि जिस दौलत नूं लुटण लई, प्राप्त करन लई मैं अनगिनत कत्तल कीते, मुल्क दे मुल्क लाशा दे छेर बणा दिते, अज ओ सिकन्दर बादशाह खाली हथ जा रेहा है ।” किस करके ? क्योंकि ऐ स्वासा दी पूंजी इक नहीं लै सके, सारी दौलत देण दे बाद वी इस करके जागो ! उठो ! ऐ स्वासा दी पूंजी दिती है ऐ खाली जा रही है, ऐ जिसने दिती है ओ लै रेहा है, हर पल, हर घड़ी उस काल दा शिकंजा साड़ी गर्दन ते टाईट हो रेहा है । ऐ न होये, कि ऐ स्वास खत्म हो जाण, ते असी आपणे घर दा रस्ता तय नहीं कर सकिये । असी दोतेया - पोतेया विच फँसे होये हां, जमीन - जायदादा विच फँसे होये हां, झूठे संबंधां विच फँसे हां । ऐ न कदी साडे होये ने, न कदी साडे होंणगे ! अगर किसी दे हो सकदे होंदे, ते अज ऐ साडे जोगे इस लोक दे विच मिलदे ही नहीं । सब तों पहले जिन्हां दे सन न, ओ परलोक दे विच इन्हानूं लै गये होंदे । अगर ओ नहीं लै जा सके, ते असी वी नहीं लै जा सकागे ! इस करके अज दे सत्संग दे विच गुरु साहबां ने जो बाणी दिती है तुलसीदास जी दे ऐ लफजां दे जरिये रामायण दे विच बड़ा गहरा भैद है । इस भैद नूं सिर्फ संत ही प्रगट कर सकदे ने और संत दी परिभाषा जेड़ी गुरु साहबां ने दिती है “पारब्रह्म ईश्वर सतिगुरु” ऐ पंजवें मण्डल दा अधियाता परम चेतन दी

ताकत, अनंत गुणां दा स्वामी उस चेतन सत्ता नूं लै करके इस जगत दे विच अवतार लैदें हन और उन्हां दा इको ही भाव होंदा है, जेडियां जीवात्मा इस जगत दे विच तङ्फ रहियां होंदियां हन उस परमात्मा नूं मिलण वास्ते ईमानदारी और मेहनत, ईमानदारी और मेहनत दे रस्ते दे विच बड़ियाँ रुकावटां आंदियां ने, इतनियां रुकावटां आंदियां ने कि जिस तरीके दे नाल इस जीवात्मा दी गर्दन ते आरा चलाया जांदा है। दास नूं बड़ा निजी तजुरबा है इस पथ ते चलण, अडिग रहण लई उस ताकत दी बड़ी जरूरत है जिसनूं सतिगुरु केरा जांदा है। बिना सतिगुरु दी ताकत दे इस ईमानदारी और मेहनत दे रस्ते ते कोई नहीं चल सकदा। असी अज तक इस जगत नूं पार नहीं कर सके, इस सफर नूं तय नहीं कर सके, उसदी इको ही वजह है असी बेर्ईमान हां! उस सतिगुरु दे जरिये जिसने सानूं मनुखा जन्म दिता, इक वारी नहीं अनगिनत वारी दिता और असी हमेशा तों गद्वार रहे हां, हमेशा ही गद्वारी कीती है और कट्टी मेहनत नहीं कीती, कट्टी रिआज़ नहीं कीता, कट्टी आपणे गुरु सतिगुरु दा हुक्म नहीं मनया। गुरु ने जो उपदेश कीता, असी गुरु दे रस्तेयां दे विच ही रुकावटां पाईया, उन्हां दी क्रिया दे विच बन्धन लै करके मौजूद हो गये। जेडे सूलियां ते चढ़ाये गये, खाल उतरवा दितियां, चरखड़ियां ते चढ़ गये,

ओ कौंण सन ? ओ भक्त सन, गुरु दे शिष्य सन । जद गुरु  
दे शिष्य दे विच असी इतनी रुकावट पाई, ते संतां दे मार्ग  
विच असी कितनियां रुकावटां पाईयां होंण गीयां, हुण वी  
पाईयां जा रहियां ने और अगे वी आण गीयां । और मन जो है  
सानूं आपणे रस्ते तों डिगा देंदा है, विचलित कर देंदा है,  
बईमान बणा देंदा है, आपणे सतिगुरु दे प्रति झूठा बणा देंदा  
है, मेहनत करन तों दूर लै जांदा है । इस करके अगर कोई  
जीवात्मा आपणा पुन खटणा चाहंदी है, आवागमन तों मुक्त  
कराणा चाहंदी है, सदा लई सुखी होंणा चाहंदी है, अमरपद नूं  
प्राप्त करना चाहंदी है ते दुबारा तों इन्हां जड़ चेतन लोकां दे  
विच उसनूं खजल न होंणा पवे, उसदी भुख और प्यास असी  
मिटाणा चाहंदे हां, ते इस सफर नूं तय करना पयेगा और ऐ  
सफर जो है इक पायलट दे जरिये, ओ पायलट है सतिगुरु ।  
सतिगुरु दे जरिये ही तय कीता जा सकदा है होर कोई वी  
जरिया या तरीका नहीं है इस सफर नूं तय करन दा और ऐ  
जींदे - जी मरन तों पहले तय करना है, मरन तों बाद कोई  
वी ऐ सफर तय नहीं कर सकदा ।